।। ओ३म्।।

कण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिएं।

– आर्यसमाज का पांचवा नियम

वर्ष ३१, अंक २१ एक प्रति : २ रुपये

सोमवार १९ मई, २००८ से २५ मई, २००८ तक

विक्रमी सम्वत् २०६५ दयानन्दाब्द : १८५

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०९ वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल: aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में
आर्यवीर दल एवं आर्यवीरांगना दल (दिल्ली)
के तत्वावधान में आयोजित

प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविरों के समापन समारोह

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश	आर्यवीरांगना दल दिल्ली प्रदेश
स्थान : कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार फेज-३, दिल्ली-११००५२	स्थान : दयानन्द मॉडल स्कूल, विवेक विहार, दिल्ली-११००३२
रविवार १ जून, २००८ प्रातः १० से दोपहर १ बजे	रविवार २५ मई, २००८ प्रातः १० से दोपहर १ बजे

आर्यसमाज की युवा पीढ़ी को आशीर्वाद देने दल बल सहित अवश्य पधारें

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं सदस्यों से निवेदन करें कि वे बसों/आरटीवी द्वारा समापन समारोह में अपने बच्चों सहित आर्यवीर दल एवं आर्य वीरांगना दल के नौजवानों व नवयुवतियों के क्रान्तिकारी व्यायाम एवं बौद्धिक प्रदर्शन देखने के लिए अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर अपनी युवाशक्ति को अपना आशीर्वाद प्रदान करें जिससे आर्यवीरों एवं वीरांगनाओं को और मनोबल

प्राप्त हो तथा आपके बच्चों में भी आर्यवीर दल तथा उसके कार्यों के प्रति रूचि जागत हो।

❖ निवेदक❖

ब्र0 राजसिंह आर्य (प्रधान) **विनय आर्य** (महामन्त्री) **अनिल तनेजा** (कोषाध्यक्ष)

उप प्रधान : सर्वश्री सोमदत्त महाजन, सत्यपाल भाटिया, हरबंस लाल कोहली, ओम प्रकाश आर्य।

उपमन्त्री : सर्वश्री अरुणप्रकाश वर्मा, सुखबीर सिंह आर्य, शिवशंकर गुप्ता, श्रीमती गीता झा, सत्येन्द्र आर्य, एवं श्री हरीश बत्रा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ - हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

सार्वदेशिक सभा का विवाद समाप्ति की ओर अग्रसर

कोर्ट द्वारा नियुक्त समिति कराएगी चुनाव

दिनांक २२ मई, २००८ को दिल्ली उच्च न्यायालय की डबल बैंच में सार्वदेशिक सभा का मुकदमा प्रस्तुत हुआ। काफी विचार–विमर्श के पश्चात् जज महोदय ने अपना मन्तव्य दर्शा दिया कि हम विवाद के हल के लिए कोर्ट द्वारा नियुक्त समिति सार्वदेशिक सभा का चुनाव सम्पन्न कराएगी। इस पर श्री मिठाईलाल सिंह जी पक्ष के वकील श्री रामफल बंसल जी को अपनी सहमति देनी पड़ी।

ज्ञातव्य है कि कैप्टन देवरत्न आर्य जी की ओर से लगभग दो वर्ष पूर्व से ही यह बात कही जा रही थी कि इस विवाद का हल केवल मात्र कोर्ट द्वारा चुनाव कराने से ही हो सकता है। अतः कोर्ट द्वारा ही चुनाव करा लिए जाएं। किन्तु श्री रामफल बंसल जी के अडियल रवैये के चलते इस पर सहमति नहीं बन सकी थी। खैर ! देर आए दुरुस्त आए। यदि यह कार्य दो वर्ष पूर्व हो जाता तो आर्यसमाज को इतने लम्बे समय तक बिना संगठित नेतत्व के कार्य नहीं करना पड़ता।

खैर, अब यह कार्य होने की उम्मीद काफी बढ़ गई है। न्यायालय ने सुनवाई की अगली तिथि २७ मई निश्चित की है। उस दिन या उससे अगले दिन २८ मई, २००८ को इस विवाद के हल हेतु महत्वपूर्ण फैसला आने की उम्मीद है। ईश्वर करे इस कार्य का शीघ्र ही समाधान हो ताकि आर्यसमाज चहुंमुखी उन्नति की ओर बढ़ सके। ❑

सत्यार्थ प्रकाश केस के सम्बन्ध में

सत्यार्थ प्रकाश केस दिनांक २१ मई, २००८ को तीस हजारी कोर्ट में प्रस्तुत हुआ। किन्तु जज महोदय के छुट्टी पर होने के कारण केस की अगली तिथि सोमवार २ जून, २००८ निश्चित की गई। इस अवसर पर कोर्ट में हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री आचार्य बलदेव जी, झज्जर से वैदिक विद्वान् डॉ० सुरेन्द्र आर्य जी, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्यजी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य जी की ओर से नियुक्त वकील श्री रवि चावला तथा उनके चार अन्य सहयोगी, श्री लाजपत राय, अग्रवाल, श्री विद्यामित्र जी ठुकराल तथा अन्य अनेक आर्य महानुभाव उपस्थित थे।

इस केस से सम्बधित किसी भी जानकारी के लिए सभा कार्यालय से २३३४३७३७, २३३६५६५६ अथवा **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी से मो० : 09826655117** अथवा आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान **श्री धर्मपाल आर्य जी से मो० : 9810061763** पर सम्पर्क करें। ❑

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के

आर्यवीरांगना व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर का

समापन समारोह

रविवार १ जून, ०८

आर्ष गुरुकुल नोएडा, सैक्टर-३३, नोएडा (उ०प्र०)

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर आर्यवीरांगनाओं को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

-: निवेदक :-

स्वामी उत्तमायति प्रधान संचालिका **9891125554**

मृदुला चौहान संचालिका **9810702760**

आर्यसमाज के नियमों की व्याख्या — दूसरा नियम

।। ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, ...।।

— प्रो० रत्नसिंह

गतांक से आगे :-

सर्वशक्तिमान्- "सर्वाः शक्तयो विद्यंते यस्मिन् स सर्वशक्तिमानीश्वरः'" जो अपने कार्य करने में किसी अन्य की सहायता की इच्छा नहीं करता, अपने ही सामर्थ्य से अपने सब काम पूरा करता है, इसलिए उस परमात्मा का नाम सर्वशक्तिमान् है। यहां "सर्व" शब्द का अर्थ "सब" नहीं है बल्कि इसका अर्थ है "योग्य सब", अर्थात् जिसमें सम्पूर्ण योग्य शक्तियाँ हैं इसका आशय यह है 'अपना कार्य करने में निरपेक्षता', अर्थात् अपने कार्य करने में किसी अन्य पर आश्रित नहीं। यही सर्वशक्तिमत्ता है। 'कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुं समर्थः अर्थात् करने योग्य और न करने योग्य करने का सामर्थ्य रखने वाले को सर्वशक्तिमान् नहीं कहते।

न्यायकारी- न्यायकर्त्ता को न्यायकारी कहते हैं। न्याय उस पक्षपातरहित धर्मरूप आचरण को कहते हैं, जो प्रत्यक्षादि प्रमाणों की परीक्षा से सत्य—सत्य सिद्ध हो। ईश्वर को न्यायकारी इसलिए कहते हैं कि उसका स्वभाव ही न्याय, अर्थात् पक्षपातरहित धर्म करने का है।

दयालु- जो अभय का दाता, सत्यासत्य सर्वविद्याओं को जानने, सब सज्जनों की रक्षा करने व दुष्टों को यथायोग्य दण्ड देने वाला है, इससे परमात्मा का नाम दयालु है।

अजन्मा - जो स्वयं जन्म नहीं लेता है, अर्थात् जन्मरहित को अजन्मा कहते हैं।

अनंत - जिसका अंत अवधि, मर्यादा, अर्थात् इतना लम्बा, चौड़ा, छोटा, बड़ा है—ऐसा परिणाम नहीं है, इसलिए परमेश्वर का नाम 'अनंत' है।

निर्विकार- जिसमें कोई विकार, अर्थात् दोष न हो।

अनादि - जिसका आदिकारण कोई भी नहीं है, उसको अनादि कहते हैं।

अनुपम - जो उपमारहित है, अर्थात् अत्युत्कृष्ट है

सर्वाधार — जो विश्वभर का आधार शक्तिरूप है।

सर्वेश्वर - जो सबका ईश्वर है।

सर्वव्यापक - जो सब जगत् में व्यापक है।

सर्वान्तर्यामी - जो सबके अंतर् को जानने वाला और सब जगत् को नियम में रखने वाला है।

अजर - जो जीर्ण, अर्थात् क्षीण नहीं होता, वह जरारहित अजर कहाता है।

अमर - जिसको मरणधर्म हो ही नहीं और सदैव वर्तमान रहे।

अभय - जिसका किसी प्रकार का भय न हो, अर्थात् भयरहित।

नित्य - जो निश्चल, अविनाशी है।

पवित्र - जो स्वयं शुद्ध, सब अशुद्धियों से पथक् और सबको पवित्र करने वाला है, उसको पवित्र करने वाला है, उसको पवित्र कहते है।

सष्टिकर्ता - जो सब जगत् की रचना करने वाला है।

उपासना - उपासना शब्द का अर्थ समीपस्थ होना है। इसका अभिप्राय अष्टांग योग से परमात्मा के समीप होकर उसके आनन्दस्वरूप में अपनी आत्मा को मग्न करना।

उसी की उपासना करनी योग्य है— जिस ईश्वर का लक्षण इस नियम में वर्णन किया गया है, उसी की उपासना करनी चाहिए। जो ऐसा न हो उसको न तो ईश्वर मानना चाहिए और न उसकी उपासना करनी चाहिए।

यह नियम आकार में सब नियमों से बड़ा है। इसमें ईश्वर—सम्बन्धी दार्शनिक पक्ष बहुत सुन्दर रीति से प्रस्तुत किया गया है। यहां ईश्वर के जिन गुणों का वर्णन किया गया है, उनसे कई अवैदिक मंतव्यों का स्वतः खण्डन हो जाता है। अद्वैत वेदांत के अनुसार ब्रह्म में अभेद है।

इस नियम में ईश्वर को सष्टिकर्ता बतलाकर जगत् के मिथ्यात्व का तथा ईश्वर की उपासना करनी योग्य है, कहकर उपासक जीव का ईश्वर से अभेद होने का खण्डन कर दिया गया है। सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी तथा 'उसी की' शब्दों से अनेकेश्वरवाद का निषेध हो जाता है। सभी धार्मिक सम्प्रदायों ने ईश्वर को महत्तम सत्ता के रूप में स्वीकार किया है। उसके दर्शन की अभिलाषा भी सभी को रहती है, परन्तु योगाभ्यास तथा शुद्धांतःकरण के बिना उसका दर्शन संभव नहीं है।

क्रमशः
आर्यसमाज के नियम व्याख्या

वर चाहिए

सुन्दर, गोरी, संस्कारशील, अमेरिका के अग्रणी बिजनस स्कूल से मैनेज़मैंट की डिग्री प्राप्त, आयु २५ वर्ष, कद ५ फुट ७ इंच की, नई देहली के समद्ध, प्रतिष्ठित आर्य, राजपूत परिवार की मेधावी, कार्यरत, शाकाहारी बेटी के लिए प्रतिष्ठित आर्यसमाजी विचारों वाले शाकाहारी परिवार का लम्बा, संस्कारवान इंजीनियरिंग तथा मैंनेजमैंट की भारत व / अथवा विश्व के अग्रणी विश्वविद्यालयों से डिग्री प्राप्त वर चाहिए। कपया सम्पर्क करें :-

श्री एस०पी० सिंह

सी-५२१, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली-११००२४

ईमेल : sps_matri2007@yahoo.co.in

Mob : 9910278316

गर्मियों के अवकाश में आर्ययात्रा

दर्शनीय स्थल : गुरु विरजानन्द की जन्मभूमि करतारपुर, वागहा बार्डर, चम्बा, डलहौजी, कांगड़ा, ऐतिहासिक नगर अमतसर के साथ हिमाचल का गुलमर्ग, खजियार एवं पचपोला।

प्रति यात्री किराया : १६००/- रुपये

कार्यक्रम : ७ जून, ०८ सायं ६ बजे गुड़गांव से प्रस्थान
८ जून, ०८ करतारपुर से वाहगा बार्डर, ९–१० जून, ०८ चम्बा में
११–१२ जून, २००८ डलहौजी, १३ जून को डलहौजी से कांगड़ा।
१४ जून, ०८ को प्रातः कांगड़ा से चिन्तपूर्णी, ज्वालादेवी होते हुए गुड़गांव।

नोट :- निवास एवं भोजन की व्यवस्था आर्यसमाजों में होगी। यदि ऐसा न हुआ तो यात्री अपने व्यय से करेंगे। खरीदा हुआ टिकट वापस नहीं होगा। आधी सवारी को सीट नहीं मिलेगी। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :–

सोमनाथ, यात्रा प्रबन्धक

दूरभाष : ९८११७६२३६४, ०१२४-२३२७३४४,२३०४८७३

वार्षिक परीक्षाओं में सफल समस्त विद्यार्थियों एवं विद्यालयों को हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा

समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी कक्षा से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 20%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों को नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रकाशित कराई गई नैतिक शिक्षा की ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 1

☎ : 23360150; Email : aryasabha@yahoo.com

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य (चार भागों में)

सम्पूर्ण वेद-भाष्य का मूल्य 1800/- रुपये

प्राप्त करें मात्र 1200/- में

डाक-व्यय पृथक् से देय होगा।

प्राप्ति-स्थान : - वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001; दूरभाष : 011-23360150, 23343737

मर्यादा पुरुषोत्तम राम की ऐतिहासिकता

– डॉ० सत्यपाल सिंह

भारत के ही नहीं बल्कि विश्व इतिहास में हजारों वर्षों से जिन महापुरुषों के चरित्र ने जनमानस को हृदय की गहराइयों तक लगतार प्रभावित किया है उनमें भगवान् राम का नाम मुख्य है। उनका युग चक्रवर्ती सम्राटों व साम्राज्यों का था। यह वह जमाना था जिस के बारे में बाइबल (जेनीसिस ११.१) में लिखा है कि सारे संसार में एक ही भाषा व वाणी थी। उस समय हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, यहूदी आदि धर्म/मत सम्प्रदाय नहीं थे और न ही आज के समान जाति आधारित सामाजिक दीवारें। तब मनुष्य समाज के दो ही भाग थे आर्य व अनार्य (असुर, राक्षस)। जो चरित्रवान व विद्वान् न था वही अनार्य (राक्षस) था। तब सारी मानव जाति की एक ही संस्कृति थी।

साहित्य शोध :- भगवान् राम के बारे में अधिकाधिक रूप से जानने का मूल स्रोत महर्षि बाल्मीकि द्वारा रचित रामायण है। इस गौरव ग्रन्थ के कारण बाल्मीकि दुनिया के आदि कवि माने जाते हैं। श्रीराम कथा केवल बाल्मीकि रामायण तक सीमित न रही; बल्कि मुनि व्यास रचित महाभारत में भी विमलसूरिकत 'पदमचरित्र' (प्राकत), रविषेणाचार्यकम 'पद्मपुराण' (संस्कत), स्वयंभूकत 'पद्मचरित्र (अपभ्रंश), 'रामचन्द्र चरित्र पुराण' तथा गुणभद्रकत 'उत्तर पुराण' (संस्कत)। जैन परम्परा के अनुसार राम का मूल नाम 'पदम' था।

दूसरे अनेक भारतीय भाषाओं में भी राम कथा लिखी गई। हिन्दी में कम से कम ११, मराठी में ८, बंगला में २५, तमिल में १२, तेलुगु में ५ तथा उड़िया में ६ रामायणें मिलती हैं। हिन्दी में लिखित गोस्वामी तुलसीदास कत 'रामचरित मानस' ने उत्तर भारत में विशेष स्थान पाया है। इस के अतिरिक्त भी संस्कत, गुजराती, मलयालम, कन्नड़, असमिया, उर्दू, अरबी, फारसी, आदि भाषाओं में रामकथा लिखी गई। महाकवि कालिदास, भास, भट्टि, प्रवरसेन, क्षेमेन्द्र, राजशेखर, भवभूति, कुमारदास, विश्वनाथ, सोमदेव, गुणादत्त, नारद, लोमेश, मैथिली शरण गुप्त, केशवदास, गुरुगोविन्द सिंह, समर्थ गुरु रामदास, संत तुकडो जी महाराज आदि चार सौ से अधिक कवियों ने, संतों ने अलग–अलग भाषाओं में राम तथा का बखूबी बखान करती हैं। इसके अलावा विद्वानों का ऐसा भी मनाना है कि ग्रीय के कवि होमर का प्रचीन काव्य 'इलियड', रोम के कवि नोनस

– शेष पष्ठ ५ पर

ब्रह्म–सूत्र द्वितीय अध्याय - प्रथम पादः (33)

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'

लोकवत्तु लीला कैवल्यम्।। ३३।।

अर्थ :- (लोकवत्) लोक के समान (तू) तो (लीलाकैवत्यम्) केवल लीला है।

भावार्थ :– ब्रह्म केवल लीला के रूप में संसार बनाता है। हम लोक में देखते हैं कि व्यक्ति बहुत से काम लीलावश प्रमोद के तौर पर, संसार के लोगों के हित और कल्याण के लिए काम करते हैं। दूसरों का कल्याण करना उनका स्वभाव हो जाता है। ऐसे ही ब्रह्म बिना किसी स्वार्थ के, कोई प्रयोजन न होते हुए भी जीवों के कल्याण के लिए जगत् की रचना करता है। 'लीला' शब्द से यह भाव प्रकट होता है कि सभी कार्य अनायास यानी बिना प्रयास के करता है। जैसे–सूर्य प्रकाश करता है, आँखे देखती हैं। ये इनका स्वभाव है। इसी प्रकार संसार के नियन्ता पद ब्रह्म का यह कर्मों के फल भी कैसे प्राप्त होंगे? जीव अपने शरीर, मन, वाणी आदि से जो शुभ–अशुभ कर्म करता है उसे उसका वैसा ही फल भी भोगना पड़ता है।

(४) जीव के कल्याण के लिए और उसे भोग अपवर्ग रूपी प्रयोजनों की सिद्धि के लिए ब्रह्म जगत् की रचना करता है। यदि वह सष्टि न बनाए तो जीव निष्क्रिय पड़े रहें। उन्हें अपने–अपने अस्तित्व का भी बोध न हो। वे प्रकति, ब्रह्म, मोक्ष आदि के बारे में जान सके।

(५) जगत् का उपादान कारण प्रकति है और अनादि है। उसका अस्तित्व तभी सार्थक होगा यदि उसका उपयोग किया जाए अर्थात् सष्टि की रचना की जाए।

सष्टि की रचना ब्रह्म के लिए

चार स्थलों – रामोपाख्यान, आरण्यकपर्व, द्रोण पर्व तथा शान्तिपर्व पर वर्णित है। बौद्ध परम्परा में श्रीराम सम्बन्धित दशरथ जातक, अनामक जातक तथा दशरथ कथानक नामक तीन जातक कथाएं उपलब्ध हैं। रामायण से थोड़ा भिन्न होते हुए भी वे इतिहास के स्वर्णिम पष्ठ हैं। जैन साहित्य में राम कथा सम्बन्धी कई ग्रन्थ लिखे गए जिनमें मुख्य हैं – रामायण के दूसरे पात्रों के बारे में काव्यों/कविताओं की रचना की है।

विदेशों में भी तिब्बती रामायण, पूर्वी तुर्किस्तान की खेतानी रामायण, इंडोनेशिया की ककबिन रामायण, जावा का सेतरराम, सैरीराम, रामकेलिंग, पातानीं, रामकथा, इण्डोचायना की रामकेर्ति (रामकीर्ति), खमैर रामायण, बर्मा (म्यनमार) की यूतो की रामयागन, थाईलॅण्ड की रामकियेन आदि रामचरित

बोध कथा

सभी प्यार चाहते हैं

– महात्मा आनन्द स्वामी

उत्तरकाशी से आगे मल्ला चट्टी है, जहां से बूढ़े केदार को मार्ग जाता है। मुझे पता लगा है कि बूढ़े केदार में एक साधु महात्मा रहते हैं, जिन्होंने महर्षि दयानन्द को देखा था। खोज करके उनके पास गया। वे एक वद्ध साधु हैं, नदी के तट पर कुटिया बनाकर रहते हैं। उन्होंने बताया कि महर्षि दयानन्द कभी इस स्थान पर रहा करते थे। साधु ने उन्हें नहीं देखा उनके गुरु ने देखा था। उन्होंने वह चट्टान भी दिखाई, जहां बैठकर महर्षि ईश्वर का भजन करते थे। मैं भी उस चट्टान पर बैठ गया। साधु बाबा अपनी कुटिया में चले गए। नदी की कल–कल छल–छल के अतिरिक्त चारो ओर सन्नाटा था, चारो ओर विशाल वन। तभी मैंने देखा कि पिछली ओर से एक बहुत बड़ा शेर चला आता है। इस नीरव वन में इतना बड़ा शेर देखकर मेरा हृदय कांप उठा। पुकारकर मैंने कहा – "स्वामीजी ! शेर आ गया ?"

साधु ने कुटिया के अन्दर से आवाज दी – "घबराओ नहीं।"

सिंह झूमता हुआ मस्ती के साथ आगे बढ़ा। साधु ने अपनी कुटिया से बाहर आकर उसे पुकारा – "आ गए तुम?"

सिंह ने उनके चरणों में शीश झुका दिया। साधु ने उसे प्यार किया और सिंह वापस चला गया। केवल मनुष्य ही नहीं, पशु भी प्यार चाहते हैं। ❑

अनादि स्वभाव है कि वह जगत जन्म स्थिति और प्रलय में प्रवत्त होता है। यहाँ किसी प्रकार के प्रयोजन को खोजना व्यर्थ है।

(१) सष्टि रचना का मात्र यही कारण नहीं है, कुछ और भी कारण नहीं है, कुछ और भी कारण है। वैदिक शास्त्रों के आधार पर सष्टि रचना का सामर्थ्य है। यह सामर्थ्य तभी सार्थक होगा जब वह सष्टि की रचना करे, अन्यथा उसके सामर्थ्य का कोई लाभ न होगा। अतः वह अपनी रचना के सामर्थ्य का सार्थक बनाने के लिए संसार की रचना करता है।

(२) ब्रह्म सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, दयालु, न्यायकारी है। ब्रह्म के ये गुण तभी सार्थक होंगे जब वह सष्टि की रचना करे। सष्टि के माध्यम से ही ब्रह्म उस सष्टि में व्याप्त होकर, सर्वज्ञ होने के कारण जीवों के शुभाशुभ कर्मों को जानेगा तथा उनके अनुसार उचित फल प्रदान करेगा। यदि ब्रह्म सष्टि की रचना न करें तो इन गुणों का होना व्यर्थ हो जायेगा। अतः अपने गुणों को सार्थकता के लिए वह जगत् की रचना करता है।

(३) ब्रह्म जीवों को उनके शुभ–अशुभ कर्मों का यथायोग्य फल देने के लिए सष्टि बनाता है। यदि परमात्मा सष्टि न बनाए तो जीवों को शरीर भी प्राप्त न हो यदि शरीर ही प्राप्त नहीं होगा, तो उसे अच्छे बुरे लीला मात्र यानी खेल है। इसका अभिप्राय यही है कि उसकी अपार और विलक्षण सामर्थ्य के समक्ष जगत् की रचना एक अत्यन्त तुच्छ कार्य है। इसलिए अपना कोई प्रयोजन न होते हुए भी ब्रह्म जीवों के कल्याण के लिए सष्टि की रचना करता है।

पतंजलि के योगदर्शन के व्यासभाष्य (१.२५) में इसी भावना को अभिव्यक्त किया गया है ***''तस्यात्मानुग्रहा भावेपि भूतानुग्रहः प्रयोजनम्।''***

अर्थात् उस (ब्रह्म) का अपना हित न होने पर भी जगत रचना में प्राणियों का कल्याण प्रयोजन है।

– शिष्य प्रश्न करता है कि संसार में कई तरह की विषमताएं पाई जाती है। कोई उच्च योनि में जन्म लेता है तो कोई निम्न योनि में। मनुष्यों में भी एक दूसरे से अन्तर है–कोई धनी है तो कोई निर्धन, कोई रोगी है तो कोई पूर्णरूप से स्वस्थ। इससे ब्रह्म पर विषमता, अन्यायकारिता का दोष आता है। इसके अलावा बाढ़, भूकम्प, महामारी आदि दैवी आपदाओं से महा विनाश होता है। नगर के नगर नष्ट हो जाते हैं। ऐसा ब्रह्म तो निर्दयी प्रतीत होता है। ऐसी स्थिति में कैसे माने कि वह जीवों के कल्याण के लिए सष्टि की रचना करता है। इसका समाधान सूत्रकार अगले सूत्र में करता है।

– सी-२ए/६० जनकपुरी,
नई दिल्ली-५८

❑

Question & Answer

Detatchment from 'Moh'

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

The questions are answered by Swami Ramswarup ji.

Q. : Although I am not THAT GOOD but I promise that I will try my best to follow the golden rules mentioned in books and CDs very honestly. It might take me some time to live a Vedic life but I am sure I will someday be able to satisfy Almighty. I don't think that I will attain moksha after this birth but I hope and pray that God is pleased enough to grant me a Vedic life (by giving me a family of pious people, following Vedic rules IN MY NEXT BIRTH). I also hope that someday I will come to your ashram and learn everything from you. - **Puja**

Ans. : Books and cassettes have since been sent to you. In my opinion, you are a good girl. Why? Because you have a faith in God and Acharya. Vedic knowledge is meant for whole universe and you are also entitled for the same. However, struggle is there. To satisfy Almighty, one has to listen/study Vedas or the books based on Vedas. And has to do daily havan/Yajyen, being the preaching of God in Vedas. perform daily havan with Gayatri Mantra along with your mother. Moksh is right in this human life but as I told above, it requires struggle to contact Acharya to learn the real path of worship. God is pleased by adopting the said path of Vedas. You are always welcome to come in the ashram with your mother. Even the expenditure of journey will be borne by ashram. So many people come here and are given the real fare etc., also. And even for all people who come from within India and abroad, boarding and lodging is free. So you are always welcome with mother here. Six ladies/girls and three children aged, four gents live permanently and in addition daily public from outside and local area, attends the preachings and learn Vedas/Yoga Philosophy.

Q. : In this kalyug how to handle double edged razor type people who speak sweetly but cut your throat from behind. Every where people are striving for their personal gain defence politics etc. Swami ji now see reservations for Muslims. No body says the truth they produce

योगः कर्मसु कौशलम्

- डॉ० अजय कुमार पाठकः

गतांक से आगे :-

बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोह : क्षमा सत्यं दमः शमः।
सुखं दुःखं भवोभावो भयं चाभयमेव च।।१०/४

श्रीमद्भागवतेपि नारायणेन कथितं यत् योगाभ्यासी मनुष्यः ईश्वरोपतिष्ठति—

जितेन्द्रयस्यायुक्तस्य जितश्वासस्य योगिनः।
मयि धारयतश्चेत उपतिष्ठन्ति सिद्धयः।।
उपासकस्य मामेवं योगधारणया मुनेः।
मद्धारणां धारयतः का सा सिद्धिः सुदुर्लभा।।

ऋक्संहितायां प्रथममंडले उल्लिलिखतं यत् योगं बिना विदुषां यज्ञकर्मणि सिद्धिर्न जायते। यथा—

यस्मादते न सिध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन। स धीनां योगामिन्वति।।१८/७

आध्यात्मेयोगाधिगमेन धीरः हर्षशोकौ जहाति इति कठोपनिषदि वर्णितम् —

तं दुर्दर्शं गूढमनुप्रविष्टं गुहाहितं गह्वरेष्ठं पुराणम्।
अध्यात्मयोगाधिगमेन देवं मत्वा धीरो हर्षशोकौ जहाति।। १/२/१२

—: क्रमशः :—

साभार : संस्कत मंजरी, जुलाई-सितम्बर, २००७

सरल सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन की १२५ वीं वर्षगांठ पर आयोजित सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर लगभग सभी वक्ताओं ने कहा कि प्रत्येक भारतीय को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना चाहिए। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु हमने वैदिक विद्वान श्री सत्यकाम वर्मा जी की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश सन्देश से जो अत्यन्त सरल भाषा में लिखी गई है एक-एक समुल्लास आर्य संदेश में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। आशा है इसे पढ़कर प्रत्येक भारतीय प्रेरणा लेगा और अन्यों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रेरित करेगा। सभी आर्य समाजों से निवेदन है कि वे एक-एक समुल्लास के प्रकाशन पर पत्रक के माध्यम से इसका प्रचार-प्रसार करे जिससे सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश घर-घर में जाए और इसकी सुगन्धि चहुं ओर फैले। - सम्पादक

thirteen children, keep their women uneducated, keep 4-4 wives. The cause is women is not given education. This country is surviving on those 10 % people who are good, hard working and true worshippers of God. People abuse brahmins. Please enlighten us how to survive in this dark age of kaliyug which really depresses me. - **Rashmi Sahu**

Ans. : Silence is better to deal with double edged razor type people. Must not take part with them in any debate etc. You know selfishness is a sin. So one must be religious minded. Daily worship like havan, meditation etc., protect us more children and wives must be prohibited by Govt. But where there is politics based on votes, corruption etc., etc., then a gentleman can do nothing. At this junction revolution is not possible. We must seek justice from Almighty God only. He listens to the true prayer in Yajyen.

The translation of a Ved mantra is very exciting which was told by Abdul Rahim Khan Khama the rep., of king Akbar. "Rahiman Chup Huea Baithiya Dekh Dinnan Ke Pher" i.e., during the bad time one should keep silence. He must discharge his duties along with hard tapasya daily. Naturally the peace of mind will come.

Q.: Please tell me how to do maa vaibhava lakshmi vratam?

-Mssarika

Ans. : "Maa vaibhava lakshmi vratam" is not mentioned in Vedas. One should always worship formless, immortal, omnipresent Almighty God who creates, nurses and destroys the universe.

To be continued...

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

2 जून से 15 जून, 2008 स्थान : गुरुकुल झज्जर (हरयाणा)

प्रवेश शुल्क : शाखानायक 200/– रुपये उप व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक : 250/– रुपये

व्यायामाचार्य, शास्त्राचार्य, नियुद्धाचार्य : 300/– रु0 बौद्धिक शिक्षक, प्राथमिक चिकित्सक : 300/– रु0

शिविर में पधारने वाले आर्यवीर अपने प्रान्तीय संचालक/आर्यसमाज के अधिकारी का संस्तुतिपत्र अवश्य साथ लाए।

–: निवेदक :–

आचार्य विजयपाल (शिविर संयोजक) राजेन्द्र विद्यालंकार (महामन्त्री) स्वामी देवव्रत (प्रधान संचालक)

9416055044 9416026571 9868620631

सत्यार्थ प्रकाश : अनुभूमिका - २

अब आर्यावर्त मनुष्यों में सत्यासत्य का यथावत् निर्णय करने वाली वेद–विद्या छूटकर अविद्या फैलके मतमतान्तर खड़े हुए यही से जैन आदि के विद्या विरुद्ध मतप्रचार का निर्मित हुआ, क्योंकि वाल्मीकीय और महाभारतादि में जैनियों का नाममात्र भी नहीं लिखा और जैनियों के ग्रन्थों में वाल्मीकि और भारत में कथित 'राम–कष्णादि की गाथा बड़े विस्तार पूर्वक लिखी है, इससे यह सिद्ध होता है कि यह मत इनके पीछे चला, क्योंकि जैसा अपने मत को बहुत प्राचीन जैनी लोग लिखते है वैसा तो वाल्मीकीय आदि ग्रन्थों में उनकी कथा अवश्य होती। इसलिए जैनमत इन ग्रन्थों के पीछे चला है। कोई कहे कि जैनियों के ग्रन्थों में से कथाओं को लेकर वाल्मीकीय आदि ग्रन्थ बने होंगे तो उनसे पूछना चाहिए कि वाल्मीकीय आदि में तुम्हारे ग्रन्थों वा नाम लेख भी क्यों नहीं? और तुम्हारे ग्रन्थों में क्यो हैं? क्या पिता के जन्म का दर्शन पुत्र कर सकता है? कभी नहीं। इससे यही सिद्ध होता है कि जैन बौद्ध मत शैव–शक्तादि मतों के पीछे चला है। अब इस बारहवें समुल्लास में जो–जो जैनियों के मत विषय में लिखा गया है सो–सो उनके ग्रन्थों के पते पूर्वक लिखा है इसमें जैनी लोगों को बुरा न मानना चाहिए क्योंकि जो–जो हमने इनके मत के विषय में लिखा है वह केवल सत्यासत्य के निर्णयार्थ है न कि विरोध वा हानि करने के अर्थ।

इस लेख को जब जैनी–बौद्ध वा अन्य लोग देखेंगे तब सबको सत्यासत्य के निर्णय में विचार और लेख करने का समय मिलेगा और बोध भी होगा। जब तक वादी प्रतिवादी होकर प्रीति से वाद या लेख न किया जाये तब तक सत्यासत्य का निर्णय नहीं हो सकता। जब विद्वान् लोगों में सत्यासत्य का निश्चय नहीं होता तभी अविद्वानों को महा अन्धकार में पड़कर बहुत दुःख उठाना पड़ता है, इसलिए सत्य की जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद वा लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है। यदि ऐसा न हो तो मनुष्यों की उन्नति कभी न हो ....अस्तु जो हो; परन्तु बहुत मनुष्य ऐसे हैं, जिनको अपने दोष तो दीखते नहीं, क्योंकि प्रथम अपने दोष देखो। उसके पश्चात दूसरों के दोषों में दष्टि देके निकालें।

–: क्रमशः :–

साभार : सत्यार्थ प्रकाश सन्देश

पृष्ठ ३ का शेष

मर्यादा पुरुषोत्तम राम की ....

की कति 'डायोनीशिया' तथा रामायण की कथा में अद्‌भुत समानता है। विश्व साहित्य में इतने विशाल एवं विस्तत रूप से विभिन्न देशों में विभिन्न कवियों/लेखकों द्वारा राम के अलावा किसी और चरित्र का इतनी श्रद्धा से वर्णन नहीं किया गया।

मन्दिर व मण्मूर्तियां :- देश-विदेशों में भगवान राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान, आदि की सैंकड़ो नहीं – हजारों मन्दिरों का निर्माण किया गया। कम्बोडिया के विश्व प्रसिद्ध, ११वीं शताब्दी में निर्मित, अंकोरवाट मन्दिर की दीवारों पर रामायण व महाभारत के दश्य अंकित हैं। इसी तरह से ६वीं सदी में निर्मित जावा के परमबनन (परमब्रह्म) नामक विशाल शिवमन्दिर की भित्तिकाओं पर रामायण की चित्रावली अंकित है।

रामायण से सम्बन्धित सैंकड़ों मण्मूर्तियां (टैराकोटा) हरयाणा प्रदेश के सिरसा, हाठ, नचारखेड़ा (हिसार), जींद, संथाय (यमुनानगर); उ०प्र० के कौशाम्बी (इलाहाबाद), अहिच्छत्र (बरेली), तथा कटिंघर (एटा) तथा राजस्थान के भादरा (श्रीगंगानगर) आदि जगहों से प्राप्त हुई हैं। इन मण्मूर्तियों पर वनवास काल की प्रमुख घटनाओं को बहुत सुन्दर रूप से दिखाया गया है। इनमें मुख्य हैं राम, इतने विस्तत साहित्य तथा पुरातात्विक प्रमाणों के बावजूद भी भगवान राम को ऐतिहासिक पुरुष न माना जाए तो इससे बड़ी विडम्बना और क्या हो सकती है?

श्रीराम का काल :- प्राचीन भारतीय कालगणना तथा पुराणीय परम्परा के अनुसार श्रीराम २४वें त्रेता युग में पैदा हुए। बाल्मीकि रामायण तथा अन्य रामायणों/ रामचरितों को छोड़कर अन्य प्राचीन ग्रन्थों में राम, रावण आदि के विषय में चार मुख्य सन्दर्भ मिलते हैंः–

१. ***त्रेता युगे चतुर्विंशे रावणः तपसः क्षयात। राम दशरथिं प्राप्य सगणः क्षयमीयीवान्।।*** *(वायु पुराण ७०.८८)*

२. ***संध्यौ तु समनुप्राप्ते त्रैतायां द्वापरस्य च। रामौ दाशरथिर्भूत्वा भविष्यामि जगत्पति।।***

(महाभारत ३४८.१६)

३. ***चतुर्विंश युगे चापि विश्वामित्र पुरः सरः। लोके राम इति ख्यातः तेजसा भास्करोपम्।।*** (हरिवंश २२.१०४)

४. ***चतुर्विंशे युग वत्स ! त्रेतायां रघुवंशजः। रामो नाम भविष्यामि चतुर्व्यूहः सनातनः।।*** *(ब्रह्माण्ड पुराण २.२.३६.३०)*

उपरोक्त संदर्भों व प्रमाणों के आधार पर यह ही सत्य मालूम होता है कि श्रीराम, रावण, विश्वामित्र आदि युग पुरुष २४वें त्रेतायुग में थे। महाभारत मनुष्य के अस्तित्व के लिए प्रमाण दिए भी नहीं जा सकते। ४–५ पीढ़ियां पूर्व अगर कोई व्यक्ति बिना सन्तान के मर गया तो उसको सिद्ध करने के लिए हमारे पास कोई प्राकतिक वस्तु न मिले। अगर कोई घर है भी तो यह उसी ने बनाया था तब तक इसका दस्तावेज नही मिलता अथवा उसके बारे में कोई जनश्रुति नहीं मिलती तो कैसे सिद्ध किया जा सकता है? आज के समय में देश में अथवा विदेशों में राज्य करने वाले प्रधानमन्त्रियों तथा राष्ट्रपतियों के बारे में १००० वर्षों के बाद में कोई प्रमाण मांगे तो उस समय उनके पास सिर्फ पुस्तकी विवरण तथा जनश्रुति ही उनके इतिहास को बता सकती है।

पिछले कुछ वर्षों में कम्प्यूटर ज्ञान रखने वाले कुछ अति उत्साही लोगों ने बाल्मीकि रामायण (बालकाण्ड १.१८.८–६) में वर्णित श्री राम के जन्म समय (चैत्र मास, शुक्ल पक्ष नवमी तिथि, पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क लग्न आदि की) 'प्लेनेटेरियम गोल्ड सॉफ्टवेयर' के माध्यम से आधुनिक गणना की है। इन लोगों ने ग्रहों नक्षत्रों आदि की स्थिति का अध्ययन करते हुए परिणाम निकाला कि **श्रीराम का जन्म १० जनवरी ५११४ ई० पूर्व** (अर्थात् आज से ७१२१ वर्ष पूर्व) हुआ था। ये लोग जहां साधुवाद के पात्र हैं, वहां हमें यह भी याद रखना चाहिए कि गणित ज्योतिष की अनभिज्ञता व साहित्यिक प्रमाण के अभाव के कारण उनका यह परिणाम ठीक नहीं। गणित ज्योतिष के हिसाब से लगभग २६००० वर्षों में राशियां अपना एक चक्र पूरा कर लेती हैं। अर्थात् एक राशि का चक्र अपने पूर्ववत् स्थान पर आने के लिए लगभग २६००० वर्ष लगते हैं।

इसीलिए राम सिर्फ ७१२१ वर्ष पूर्व ही जन्मे, उससे २६००० वर्ष पूर्व नहीं यह किस आधार पर कहा जा सकता है? पहले दिए गए वायु पुराण व महाभारत के प्रमाणों के आधार पर यदि हम श्रीराम का जन्म २८वें त्रेता (वर्तमान चतुर्युगी) में माने तो तब से राशि चक्र आकाश में ३३ चक्कर लगा चुका है व ३४वां चालू है और यदि हम २४वें त्रेता का आधार लेते हैं तो तब से लेकर आज तक ६६८ राशिचक्र पूरे हो चुके हैं और ६६६वां चक्र अभी चल रहा है।

– शेष अगले अंक में

आर्यसन्देश - चतुर्थ अंक : नारी संसार

भारतीय समाज में नारी का महत्व

सीता, लक्ष्मण का पंचवटी गमन, मारीच मग, त्रिशिरा राक्षस द्वारा खर–दूषण से विचार–विमर्श और राम द्वारा १४ राक्षसों के वध का वर्णन, रावण द्वारा राम सीता हरण, सुग्रीव आदि द्वारा सीता को आभूषण फैंकती देखना, सुग्रीव द्वारा राम का स्वागत, सुग्रीव–बाली युद्ध, श्रीराम द्वारा बाली वध, हनुमान द्वारा अशोक वाटिका को नष्ट किया जाना, त्रिशिरा राक्षस का वध, रावण पुत्र इन्द्रजीत का युद्ध में जाना, आदि–आदि दश्य विद्यमान हैं। इन मण्मूर्तियों पर गुप्तकाल पुर्व की लिपि में बाल्मीकिय रामायण के श्लोक भी लिखे गए हैं। ये मण्मूर्तियां हरयाणा के गुरुकुल झज्जर के पुरातत्व संग्रहालय में देखी जा सकती हैं। इसके अलावा सैंकड़ो मण्मूर्तियां भारत के विभिन्न संग्राहलयों तथा लंदन म्यूजियम में संग्रहित हैं।

कुषाण सम्राट कनिष्क ने अपनी मुद्रा पर वायु देवता हनुमान को स्थान दिया था। बादशाह अकबर ने अपनी एक स्वर्ण मुद्रा पर राम–सीता को चित्रित किया था। दिल्ली के सफदरजंग मदरसे में रामायण के चित्र अंकित हैं। मध्य भारत के धार तथा रतलाम राज्य की मुद्राओं पर हनुमान अंकित हैं। सन्तों द्वारा प्रचलित पीतल की मुद्रओं पर राम आदि चारों भाई, सीता तथा हनुमान को दिखाया गया है।

के अनुसार श्रीराम त्रेता एवं द्वापर युगों के सुधिकाल में हुए थे। यहां २४ वें किवां दूसरे त्रेता का वर्णन नहीं है।

ऊपर लिखे प्रमाणों के आधार पर हम अगर २४वे त्रेता की समाप्ति पर राम का काल मानें तो युगों की गणना के हिसाब से ४,३२,००० वर्षों का एक कलियुग, उसके दुगने अर्थात् ८,६४,००० वर्षों का एक द्वापर, कलियुग के तीन गुने अर्थात् १२,९६,००० वर्षों का एक त्रेता युगा तथा कलियुग के चार गुने अर्थात् १७,२८,००० वर्षों का एक सत (कत) युग अर्थात् ४३,२०,००० (४३ लाख २० हजार वर्षों का एक चतुर्युगी)।

२४वीं चतुर्युगी का द्वापर व कलियुग (१२,९६,०००) वर्ष। २५वीं, २६वीं, २७वीं तीन पूरी चतुर्युगी (१,२९,६०,०००) वर्ष। २८वीं चतुर्युगी का सतयुग, त्रेता व द्वापर युग (३८,८८,०००) वर्ष। २८वीं चतुर्युगी का अब चल रहे कलयुग के बीते वर्ष ५,१०८। इन सबका योग होता है, १,८१,४९,१०८ (१ करोड, ८१ लाख, ४९ हजार, १०८ वर्ष) और अगर श्रीराम का काल हम अभी चल रहे २८वीं चतुर्युगी में गए त्रेता में माने तो बीते द्वापर के (८,६४,०००) वर्ष + कलियुग के बीते (५१०८) वर्ष जोड़कर श्रीराम का समय आज से ८,६९,१०८ वर्ष ठहरता है।

इतने लम्बे काल के बाद किसी भी भवन, मूर्ति, मुद्रा, हथियार आदि का अस्तित्व रह ही नहीं सकता। प्रत्येक

व्यक्ति समाज की एक इकाई है। वैदिक साहित्य में व्यक्ति से तात्पर्य केवल पुरुष न होकर स्त्री पुरुष दोनों से है। सष्टि या जीवन के लिए दोनों अनिवार्य है। दोनों के योग से ही जीवन प्रवाह परिवारों के रूप में विकसित होता हुआ राष्ट्र और समाज का रूप ६ ाारण करता है। समाज में स्त्री-पुरुष का रूप समाहित है। स्त्री पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों में से किसी की भी सत्ता कम व अधिक नहीं है। अपने-अपने स्थान पर दोनों महत्वपूर्ण हैं।

वर्तमान युग में स्त्री की जो दुदर्शा हो रही है, उसके लिए स्त्री–पुरुष दोनों समान रूप से उत्तरदायी हैं। प्राचीन भारत में जो नारी देवी के रूप में स्वीकत थी, वह अब अबला और केवल भोग की वस्तु कैसे बन गई? किसने उसे देवताओं के घर से बाहर निकालकर रूप की मंडी में बैठाया है? ये प्रश्न स्त्री–पुरुष दोनों के लिए विचारणीय हैं। वेदों में स्त्रियों के लिए आदेशित किया गया है कि वे अपने रूप का प्रदर्शन अपने पतियों के अतिरिक्त अन्य पुरुषों के समक्ष न करें। किन्तु आज सार्वजनिक या सामाजिक मंच पर स्त्रियों के नग्न सौन्दर्य का प्रदर्शन क्यों? और किसके द्वारा किया जा रहा है?

जिस मनु के देश में नारी की पूजा होती थी, वहां पर पुरुषों का संग क्यों? सैक्स और रोमांश अथवा बदबूदार प्रेम का खेल, खेल रही है और प्रेम के अभद्र, अश्लील और अमानवीय खेल को समाज ने क्यों स्वीकत किया?

मनु के अनुसार जिस देश या जिस समाज में नारी की पूजा होती है, वहां देवताओं या दिव्य शक्तियों का निवास रहता है। स्त्री को सम्मान देने वाला घर औरसमाज सम्पूर्ण सुखों से भरा रहता है। **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।**

भारतीय संस्कति तथा सभ्यता के अनुसार स्त्रियां केवल भोग और घर में कैद होकर रहने वाली दासियां नहीं हैं। वेदों के अनुसार स्त्री ब्रह्मा की अखण्ड शक्ति है। ब्रह्म की अदिति शक्ति रूद्र आदि देवों की माता, वसुओं की पुत्री और आदित्य की भागिनी है। यथा –

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां
स्वसादित्यानां अमतस्य नाभिः।।

ऋग्वेद ८/१०/१५

ऋग्वेद के अनुसार स्त्री, ज्ञान विज्ञान अथवा विद्या की अधिष्ठात्री – देवी सरस्वती है। ऋषियों ने स्त्रियों को जो मान, सम्मान दिया है, वह विश्व इतिहास तथा साहित्य में अद्वितीय है।

– शेष पष्ठ ६ पर

सामाजिक विज्ञान हिन्दी विश्वकोश

हाल ही, ऑथर्स गिल्ड आफ इण्डिया द्वारा अनुव्रत भवन दिल्ली में आयोजित वसन्तोत्सव में वरिष्ठ साहित्यकार व समाजशास्त्री डॉ० श्याम सिंह शशि ने अपनी ताजा कविताएं प्रस्तु करते हुए कहा कि हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं के साहित्यकार को केवल कविता, कहानी तथा उपन्यास लेखन तक सीमित नहीं रहना चाहिए बल्कि उन्हें ज्ञान–विज्ञान व साहित्य के क्षेत्र में भी अपना योगदान देना चाहिए।

डॉ० शशि को जब उ०प्र० सरकार द्वारा प्राप्त लोहिया सम्मान की दो लाख रुपये की राशि के बारे में पूछा, कि वे उसका क्या करेंगे? तो उन्होने कहा कि उनके द्वारा शुरु किए गए 'सामाजिक विज्ञान हिन्दी विश्वकोश' के निर्माण के अधूरे कार्य को पूरा करने में यह मामूली का अवदान होगा क्योंकि उनके द्वारा निर्मित पांच खंडों में से अभी तक केवल तीन खंड ही प्रकाशित हुए हैं तथा २५ खंडों पर काम चल रहा है। इस विशाल आर्थिक व्ययसाध्य कार्य में सहयोग देने के लिए सभी हिन्दी राज्यों में मुख्यमन्त्रियों को पत्र भेजे गए हैं। उन्हें दुःख है कि अभी तक केन्द्र सरकार अथवा किसी भी राज्य सरकार से इस ऐतिहासिक प्रयोजना के लिए कोई संतोषप्रद उत्तर नहीं मिले। केवल भारत सरकार के केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय से प्रकाशन हेतु आंशिक सहायता मिलती है जो इस बहद निर्माण योजना के लिए नगण्य है।

❖

आदर्श जीवन निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्वावधान में सार्वदेशिक आर्य वीर दल मुम्बई ने 'आदर्श जीवन निर्माण शिविर' का आयोजन २० से २७ अप्रैल, ०८ तक आर्यसमाज सान्ताक्रुज में किया। रविवार २७ अप्रैल, ०८ को इस शिविर का समापन स्वामी मेधानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में हुआ। इस शिविर के मुख्य शिक्षक आचार्य को लाभान्तिवत किया। जिसमें श्री नरेन्द्र वेदालंकार, पं० धर्मधर शास्त्री, पं० विजय आर्य, पं० महेन्द्र कुमार शास्त्री, पं० ज्येष्ठ राज ठक्कर, श्रीमती अनीता शास्त्री, श्रीमती रीटा शाहर श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री, पं० किशन शास्त्री, पं० विजय पाल शास्त्री श्री अनन्त श्रीमाली, श्री अजय अटपटू, श्री विकास आर्य श्री देवेन्द्र भारद्वाज, श्री

पृष्ठ 5 का शेष

भारतीय नारी लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, जगत् जननी तथा ब्रह्मा है। मानव सष्टि की रचयित्री स्त्री ही है।

गहस्थाश्रम जो परिवार का रूप है वह संसार की सर्वज्येष्ठ व सर्वश्रेष्ठ संस्था है। इस बड़ी संस्था की अनदेखी कर अन्य संस्थाओं या अन्य उपायों द्वारा जिस विश्व शान्ति या जिस मानव कल्याण की कल्पना कर हाह है, उनसे विश्व कभी सुखी नहीं होगा।

वेदों के अनुसार स्त्रियों को देवी, दुर्गा, लक्ष्मी तथा सरस्वती का उच्च स्थान प्रदान किया गया है। स्त्रियों प्रेम, स्नेह और सेवा द्वारा जगत् के दुष्टों का विनाश करने वाली शक्ति स्वरूपा हैं।

स्त्री संसार को सत्यव्रती – दिव्य संतति देने वाली जगत् जननी है। वेदों के अनुसार जो स्त्रियां ऋत् या सत्य का संवर्द्धन करने वाली हैं, वे ही सुपूज्या, पवित्र कर्मी, र्स्व स्पहा दुर्निता निवारिका और अनासक्त होती हैं। ऐसी स्त्रियां ही देवियां हैं और ऐसी देवियां ही देवजनों को जन्म देने के लिए दाम्पत्य धर्म स्वीकार करती हैं। (१/१४२/६)

दाम्पत्य धर्म का पालन करते हुए एक अन्य मंत्र में यह कहा गया है कि देवियों को देवजनों को ही जन्म देना चाहिए – ***जनया दैव्यं जनम्।।*** *(ऋग्वेद १०/५३/६)*

कुछ अपवादों को छोड़कर भारत में नारी का तिरस्कार या अवहेलना कभी नहीं की गई नारी उस परिवार की मुखिया होती है, जिससे विश्व एक परिवार के रूप में विकसित हो सकता है। स्त्रियां उन माताओं का रूप हैं जिनसे ममता, प्रेम, स्नेह, अहिंसा, दया, क्षमा, त्याग और सेवा के पवित्र भाव पैदा होते हैं। उपर्युक्त गुणों के कारण स्त्री पत्नी रूप में घर में महारानी (सम्राज्ञी) का पद प्राप्त करती है। वह अपने विशिष्ट गुणों के कारण सास श्वसुर, ननदों और देवरों आदि सभी की सम्राज्ञी होती थी –

सम्राज्ञी श्वसुरे भव, सम्राज्ञी श्वश्रवां भव। ननान्दरि सम्राज्ञी भव, सम्राज्ञी अधिदेवषु।।

(ऋ० १०/८५/४६, अथर्व० १४/१/४४)

वस्तुतः पत्नी का यह धर्म है कि वह अपने परिवार रूपी साम्राज्य की सुसेविका और सुव्यवस्थापिका बनकर सबके दिल–दिमाग पर राज्य करे। वैसे भी पत्नी उसे कहते हैं, जो पति को पतन से बचाए और नारी उसे कहते हैं जो नेतत्व करे। यदि व्यक्ति तथा परिवार सदाचारी और परोपकारी हो जाए तो संसार में सब ओर सुख व्याप्त हो सकता है। वेदों में गहस्थ

आवश्यकता है

योगेश शास्त्री (कोलकाता) एवं श्री भेरुसिंह जी शाहजहांपुर थे। इस शिविर में ५० से अधिक आर्य परिवारों के बच्चों ने भाग लिया। मुम्बई के सभी आर्य समाजों के कर्मठ सदस्यों ने सक्रिय रूप से भाग लेते हुए बच्चों का उत्साहवर्धन किया। आदर्श जीवन निर्माण शिविर के अन्तर्गत २० से २७ अप्रैल तक शारीरिक, आत्मिक व बौद्धिक उन्नति के लिए आर्यवीर दल मुम्बई ने उत्तमोत्तम विद्वानों को आमन्त्रित करके विभिन्न विषयों पर यथा उत्तम विद्यार्थी बनना, स्मरण शक्ति बढ़ाना, व्यक्तित्व विकास, आत्मविश्वास पैदा करना, तनाव से मुक्ति, योग प्राणायाम, ध्यान, आसन, स्वस्थ निरोग रहने के दढ़ सूत्र आदि पर सैद्धान्तिक मार्मिक सारगर्भित एवं प्रभावोत्पादक प्रवचनों से शिविरार्थियों दिलीप वेलाणी एवं श्रीमती जयाबेन, श्री संदीप आर्य, श्री राजीव शुक्ला ने भाग लिया।

दिनांक २७ अप्रैल को समापन समारोह में यज्ञ का ब्रह्मत्व डॉ० सोमदेव शास्त्री ने किया। विशिष्ट अतिथि श्रीमती शिवराज वती आर्या ने राष्ट्रगीत प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि श्री वेदप्रकाश गर्ग, सदस्य पतंजलि योग पीठ हरिद्वार ने उपस्थित होकर बच्चों का मनोबल बढ़ाते हुए सब प्रकार से सहयोग का आश्वासन दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के कोषाध्यक्ष श्री राजकुमार गुप्ता ने इस शिविर की सफलता एवं आर्यवीरों का गहन जोश देखते हुए भविष्य में आर्यसमाज वाशी में शिविर लगाने की घोषणा की।

— पं० नरेन्द्र शास्त्री, संचालक

अध्यापकों की आवश्यकता

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर–१४४८०१ जिला – जालन्धर (पंजाब) में +२ तथा बी०ए० (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम के अनुसार) संस्कत, अंग्रेजी, हिन्दी, विज्ञान और गणित के विषयों को पढ़ाने के लिए सुयोग्य, संस्कारशील तथा परिश्रमी अध्यापकों की आवश्यकता है। दो विषयों में एम०ए० या आचार्य को प्राथमिकता दी जाएगी। वेतन, योग्यता, के आधार पर चार और छः हजार के बीच दिया जाएगा। गुरुकुल परिसर में आवास और भोजन की व्यवस्था भी है।

साक्षात्कार गुरुकुल के प्राचार्य के कक्ष में १२ जून, २००८ वीरवार को प्रातः १० बजे होगा। इन विषयों को पढ़ाने में सक्षम आवेदनकर्ता अपने आवेदन पत्र योग्यता प्रमाणपत्रों सहित साथ लाए।

विशेष जानकारी हेतु चलभाष : ०९२१६१३८८८६ पर सम्पर्क करें।

— भूषणलाल शर्मा, प्राचार्य

आर्यसमाज बेतिया (बिहार) में एक सिद्धान्तनिष्ठ संन्यासी या वानप्रस्थी की आवश्यकता हैजो यहां आर्य समाजियों को सिद्धान्त निष्ठता का पाठ पढ़ा सके। उनको यहां समुचित सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। सम्पर्क करें :–

रघुनाथ आर्य चतुर्वेदी
प्रधान, आर्यसमाज बेतिया,
पश्चिम चम्पारण (बिहार) - ८४५४३८,
मो० : ९९०५०१०४४४

द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल (मानव कल्याण केन्द्र, देहरादून) में

योगसाधना शिविर एवं वार्षिकोत्सव

द्रोण स्थली आर्ष कन्या गुरुकुल (मानव कल्याण केन्द्र) देहरादून में १ जनू, ०८ से ६ जून, २००८ तक स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक रोजड़ (गुजरात) की अध्यक्षता में योगसाधना शिविर का आयोजन किया गया है एवं ७ व ८ जून दो गुरुकुल का वार्षिकोत्सव है। अतः सभी लोग अधिक से अधिक संख्या में गुरुकुल आश्रम पहुंचकर लाभान्वित हों।

प्रवेश सूचना

गुरुकुल के नए सत्र में बालिकाओं के प्रवेश हेतु २५ मई, २००८ को प्रवेश परीक्षा होगी। इच्छुक अभिभावक २५ मई, २००८ तक गुरुकुल में प्रहुंचें। विशेष जानकारी हेतु निम्नं दूरभाष पर सम्पर्क करें :–

डॉ० वेद प्रकाश आर्य, संस्थापक,
दूरभाषः २७३३२६८, ३२६६०६०,
२७३४५७६, ३२६११५८

या पति–पत्नी के लिए कहा गया है कि वे दोनों सत्यनिष्ठ रहते हुए वद्ध और समर्थ पुरुषों का सहारा या आश्रय बने। इसके अतिरिक्त दम्पति को भूखों के लिए भोजन, पापी के लिए रक्षक और तारक, अन्धों के लिए आंख, दुर्बल व दलितों के लिए रक्षक और रोगियों के लिए चिकित्सक बनाना चाहिए। *(ऋ० १०/३६/३)*

इस प्रकार परिवार या गहस्थ संसर को रोग, पाप और अवयुक्त कर सकते हैं। सब सुखी हों, कोई भी दुखी न हो यही गहस्थ का धर्म है। अतः इसी धर्म का पालन करते हुए परिवार से परिवार और परिवारों से विश्व परिवार का विकास करना चाहिए। ❖

"पुरोहित की आवश्यकता है"

आर्यसमाज कालकाजी ए–ब्लाक, कालकाजी, नई दिल्ली–११००१९ में एक पुरोहित की आवश्यकता है।

शैक्षिक योग्यता कम से कम आचार्य की डिग्री हो। इच्छुक व्यक्ति अपनी शैक्षिक योग्यता, अनुभव, आयु के प्रामाणपत्रों सहित अपना आवेदन पत्र प्रधान/मन्त्री को ऊपर दिए पते पर १० जून, ०८ तक भेजने की कपा करें। सम्पर्क करें :–

प्रधानः- ०११-२६४४६६४६ (निवास),
२०२१६७३५ (मोबाईल)
मन्त्री :- ०६३१२२१०६०१

आर्यसमाज ब्रह्मपुरी, न्यु उस्मानपुर दिल्ली-५३ का

२६वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज ब्रह्मपुरी, शहीद भगत सिंह मुहल्ला, न्यु उस्मानपुर दिल्ली का २६वां वार्षिकोत्सव बड़े हर्ष उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। दिनांक १ मई, ०८ वीरवार से ४ मई, ०८ रविवार तक प्रतिदिन योग साधाना, आसन, प्राणायाम आदि प्रातः ५.३० से ६.३० बजे तक डॉ० स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती द्वारा सम्पन्न कराया गया।

ब्रह्मयज्ञ एवं देवयज्ञ प्रातः ७ बजे से ८ बजे तक यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती रहे। यज्ञ प्रश्चात् स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती का प्रवचन हुआ जिसमें उन्होंने वेदों की उपयोगिता एवं वेदों में योग साधना द्वारा परमात्मा की प्राप्ति का मार्ग बतलाया।

भक्ति संगीत प्रातः तथा सायंकाल श्री आजाद मधुर शास्त्री द्वारा ईश्वर भक्ति देश एवं महर्षि दयानन्द के गुणगान पर भजनों का कार्यक्रम हुआ। दिनांक १ से २ मई, ०८ को श्री योगेन्द्र शास्त्री का प्रवचन हुआ। आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री का प्रवचन रात्रि ८ से १० बजे हुआ।

— ***महात्मा आर्यमुनि, प्रधान***

आर्यसमाज बी ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली-५८ में

आर्य महिला सम्मेलन सम्पन्न

दिनांक ८ मई, २००८ को आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्य महिला सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन का विचारणीय विषय था – अविद्या का नाश और विद्या की वद्धि करनी चाहिए।

सम्मेलन के प्रारमी में बहनों ने ही यज्ञ सम्पन्न किया। स्वागत गान से आगन्तुकों का स्वागत किया। यह स्वागत गाण सर्वश्रीमती वीबाला आर्या, विमला मलिक, उषा टुटेजा एवं सुनीता सहदेव ने प्रस्तुत किया। सम्मेलन की अध्यक्षता श्रीमती विमला मलिक ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ० स्वामी उत्तमा यति विराजमान थीं और श्रीमती सरोजनी सचदेव विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थीं।

मुख्य विषय पर प्रकाश डालते हुए स्वामी उत्तमायति ने योग दर्शन के एक सूत्र **'अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्य शुचि सुखात्मख्यातिरविद्या'** की व्याख्या करते हुए कहा कि मिथ्या ज्ञान का दूसरा नाम अविद्या है तथा यह अविद्या दुःख उत्पन्न करने वाली हैं। महर्षि दयानन्द के शब्दों में जो जैसा है उसे वैसा ही जानना विद्या है तथा उससे विपरीत अविद्या है।

मंच का सफल संचालन श्रीमती वीरबाला जी ने किया।

— ***विमला मलिक, प्रधाना***

आर्यसमामज डी०सी०एम० रेलवे कालोनी, दिल्ली में

स्व० श्री सुरेश ग्रोवर की स्मति में यज्ञ एवं गोष्ठी

आर्यसमाज मन्दिर दिल्ली क्लॉथ मिल, रेलवे कालोनी, निकट बाड़ा हिन्दूराव, दिल्ली–६ में स्व० श्री सुरेश ग्रोवर स्मति वार्षिक यज्ञ एवं गोष्ठी **"आर्यसमाज जन-जन का प्रिय बने"** आर्यनेता श्री कीर्ति शर्मा की अध्यक्षता में २६ मई, २००८ की प्रातः ८ से ६.३० बजे तक होगी।

आर्यसमाज डी०सी०एम० के सचिव श्री रणधीर आर्य ने बताया कार्यक्रम में माता शीला ग्रोवर, उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान महाशय रामविलास खुराना, पूर्व डी०सी०पी० चौधरी चन्द्रभान प्रमुख अतिथि होंगे। श्री चूनीलाल विज, श्री नफे सिंह, श्री अखिलेश भारती, श्री रमेश डाबर, माता पुष्पा विज, श्री खेमकरण चुग, श्री राजेन्द्र मदान, श्री संजीव आर्य स्थानीय आर्यसमाजों के अधिकारी भी भाग लेंगे।

आर्यसमाज करोल बाग, नई दिल्ली में २८ मई, २००८ बुधवार को प्रातः १० से १२.३० बजे तक सुरेश ग्रोवर परमार्थ ट्रस्ट की ओर से वार्षिक यज्ञ एवं भजनसंध्या का आयोजन होगा।

— ***चन्द्रमोहन आर्य, प्रेस सचिव***

डॉ० रूपकिशोर शास्त्री उ०प्र० सरकार द्वारा पाणिनि पुरस्कार से सम्मानित

वैदिक साहित्य, संस्कत, धर्म एवं दर्शन के मनीषी एवं वैदिक सिद्धान्तों के व्याख्याता डॉ० रूप किशेर शास्त्री को उ०प्र० सरकार द्वारा उनके सांहितेय निरुक्ति कोषः को २५०००/– रुपये के उ०प्र० सरकार के प्रतिष्ठित पुरस्कार पाणिनि पुरस्कार से भव्य समारोह में लखनऊ में ७ मई, २००८ को सम्मानित एवं पुरस्कत किया गया।

डॉ० रूप किशोर शास्त्री जो प्रो० रूप जी शास्त्री के नाम से विख्यात हैं, ऑफ ह्यूमन कर्स, वैदिक संध्या यज्ञीयम्, वैदिक वाङ्मय प्रायश्चित धर्म मीमांसा एवं दण्ड विधान की अवधारणा आदि विषयों पर इनके लगभग १८ ग्रन्थ अब तक प्रकाशित हो चुके हैं।

इसके अतिरिक्त आपने हॉलैण्ड, थाईलैंड, नीदरलैंड, बेल्जियम, इंडोनेशिया आदि देशो में वेद एवं धर्म संस्कति के सिद्धान्तों की ध्वजा को फहराकर गौरवान्तिवता प्रदान की है।

— ***समाचार प्रतिनिधि***

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में
२७वें वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर

१८ मई से १ जून, २००८

स्थान : आर्यसमाज मेन बाजार, रानी बाग, दिल्ली

उद्घाटन : १८ मई, रात्रि ८ बजे

समापन : १ जून, प्रातः ८ बजे

आर्यजन कार्यक्रमानुसार अधिकाधिक संख्या में पधारकर आशीर्वाद प्रदान करें।

— वेदव्रत मेहता, प्रधान
प्रेमलता शास्त्री, महामन्त्री

आर्यसमाज शकरपुर, दिल्ली का
४१वें वार्षिकोत्सव

१६ से २५ मई, २००८

यज्ञ पूर्णाहुति एवं समापन २५ मई, २००८

चतुर्वेद शतकम यज्ञ : प्रातः ६.४५ बजे
ब्रह्मा : पं० विजय प्रकाश शास्त्री
भजनोपदेश : श्री दिनेश दत्त
अध्यक्षता : डॉ० सुशीला लाल
मुख्य अतिथि : डॉ० अशोक वालिया
वक्तागण : श्री धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य, श्री सुरेन्द्र रैली, श्री दिनेश दत्त, एवं श्री ओमवीर शास्त्री।

सभी आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

— मिश्रीलाल गुप्ता, प्रधान
पतराम त्यागी, मन्त्री

आर्यसमाज पंखा रोड सी-३ जनकपुरी नई दिल्ली का
वार्षिकोत्सव

२२ से २५ मई, २००८

यज्ञ : प्रतिदिन प्रातः ६ से ६.३० बजे
ब्रह्मा : आचार्य अखिलेश्वर जी
भजन : पं० राजवीर शास्त्री
भजन—वेदकथाः सायं ७.३०—९.३०बजे

समापन समारोह : २५ मई, २००८

समयः प्रातः ७.३० से १२.३० बजे
ऋषि लंगर : कार्यक्रमोपरान्त

सभी आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

— रामकष्ण सतीजा, प्रधान
जयपाल गर्ग, मन्त्री

निर्वाचन समचार

आर्य स्त्री समाज अशोक विहार-१, दिल्ली-५२

प्रधाना : श्रीमती वासन्ती चौधरी
मन्त्रिणी : श्रीमती कष्णा मदान
कोषाध्यक्षाः श्रीमती विमला भाटिया

आर्यसमाज मुल्तान देवनगर नई दिल्ली-११०००५

प्रधान : श्री नफेसिंह देसवाल
मन्त्री : श्री रमेश बेदी
कोषाध्यक्षः श्री राजेन्द्र दीवान

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। — **सम्पादक**

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुण्यभूमि गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के वेद विभागाध्यक्ष अध्यापन कार्य के साथ—साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त बहद् शोध योजना के प्रधान गवेषक भी हैं। वेद एवं आर्य सिद्धान्तों के प्रखर प्रवक्ता वर्ष २००२ में उत्तरांचल सरकार द्वारा साहित्यमहोपाध्याय की उपाधि से अलंकत एवं उ०प्र० सरकार द्वारा २००३ व्यास एवं २००५ सायण पुरस्कार से पुरस्कत डॉ० रूप जी शास्त्री की वैदिक वाङ्मय निर्वचन कोषः, संहितासु निर्वचनमूलम्, दयानन्दनिरुक्ति व्युत्पत्तिकोषः आदि कतियां चर्चित एवं प्रसिद्ध रही हैं। डॉ. शास्त्री ने वेद, व्याकरण, धर्म—दर्शन संस्कति एवं सामाजिक विषयों पर भी दशधिक कतियों की रचना की है। सामवेदीय ब्राह्मण दार्शनिक अध्ययन, वेद भाष्यम् निरुक्ति व्युत्पत्तीय वहद् कोष, जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण में निहित दार्शनिक सिद्धान्त, सम्भलो नीच योनियों से, वैदिक मैरिज प्रोसीजर, बिवेयर

स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती को श्रद्धांजलि

आर्यसमाज सज्जन नगर, उदयपुर राजस्थान के साप्ताहिक यज्ञ—सत्संग के पश्चाता् स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती के पंच तत्व में विलीन हो जाने से आर्यसमाज भवन में शोक सभा का आयोजन किया गया, आर्यसमाज के पदाधिकारियों ने अपने प्रिय स्वामी जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर आर्यसमाज में स्वामी जी द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों एवं योगदान का स्मरण किया। उललेखनीय है कि स्वामी जी ने देश—विदेश में भ्रमण कर आर्यसमाज का प्रचार प्रसार किया। स्वामी जी ने वर्षों तक नवलखा महल गुलाबी बाग उदयपुर आर्यसमाज हिरण मगरी में रहकर आर्यसमाज के कार्यों को आगे बढ़ाया। साथ ही स्वामी जी ने वर्षों तक आर्यसमाज सज्जन नगर उदयपुर के प्रधान पद को सुशोभित किया।

— हुकमचन्द शास्त्री, मन्त्री

श्री मनोहरलाल 'मानवी' का निधन

आर्यसमाज राणा प्रताप बाग, दिल्ली के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री मनोहरलाल 'मानवी' का १ मई, २००८ को निधन हो गया। वे आर्यसमाज राणा प्रताप बाग के मन्त्री श्री रमेश डाबर के मामा थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। — सम्पादक

साप्तहिक आर्य सन्देश
19 मई, 2008 से 25 मई, 2008
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि. नं० डी.एल. (एन.डी.) - ११/६०७१/२००६-२००८
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक २२/२३–०५–२००८
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३६/२००६-०८
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

आर्यसमाज जनकपुरी बी ब्लाक में आर्यवीर दल जनकपुरी शाखा का

आर्यवीर सम्मेलन सम्पन्न

आर्यवीर दल जनकपुरी जो आर्यवीर दल दिल्ली की बहुत पुरानी शाखा है का आर्यसमाज जनकपुरी बी ब्लाक के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में आर्यवीर सम्मेलन का अयोजन किया गया, जिसमें लगभग १५० आर्यवीरों ने भाग लिया। समारोह की अध्यक्षता आर्यसमाज के प्रधान श्री सुन्दरलाला कथूरिया ने की।

समारोह में आर्यवीरों ने अपने-अपने मन-मोहक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कुछ आर्यवीरों ने व्यायाम प्रदर्शन के सुन्दर कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए।

समारोह में सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की प्रधान संचालिका स्वामी उत्तमा यति जी ने बहुत सुन्दर प्रेरक भजन प्रस्तुत किए। समारोह में जिन आर्यवीरों ने अपनी प्रस्तुतियां दी उन्हें एक–एक पुस्तक पुरस्कार रूप में आर्यसमाज की ओर से प्रदान की गई।

समारोह के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र आर्य तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में सर्वश्री बहस्पति आर्य, जितेन्द्र भाटिया, रामभरोस शाह तथा दिनेश चन्द्र शर्मा उपस्थित थे, उनका भी इस अवसर पर स्वागत किया गया।

अवश्य करना चाहिए क्योंकि इसके उच्चारण से बुद्धि निर्मल एवं तीव्र होती है।

समारोह में जनकपुरी शाखा के सभी आर्यवीरों ने भाग लिया तथा समारोह को सफल बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करने वाले आर्यवीर मुख्य रूप से सर्वश्री आशीष आर्य, राजीव तलवार, प्रदीप कुमार, नितीश आर्य हैं। श्री अमर आर्य द्वारा नियमित रूप से जनकपुरी में शाखा लगाई जा रही है उनका भी इस

— *मन्त्री*

निर्वाचन समचार

आर्य समाज सागरपुर
नई दिल्ली-११००४६

प्रधान : श्रीमती विद्यावती आर्या
मन्त्री : श्री हरिसिंह आर्य
कोषाध्यक्षः श्री सत्यपाल सिंह आर्य

आर्यसमाज सरिता विहार
एफ०जी० पाकेट, नई दिल्ली-७६

प्रधान : श्रीमती रविकान्ता अरोड़ा
मन्त्री : श्री जगदीश चन्द्र मल्होत्रा
कोषाध्यक्षः श्री प्रेम प्रकाश अनेजा

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड
विकासपुरी, नई दिल्ली-१८

प्रधान : श्री कुलभूषण कुमार
मन्त्री : श्री ललित चौधरी
कोषाध्यक्षः श्री विपिन सरीन

सुन्दर लाल कथूरिया ने आर्यवीरों को उद्बोधन देते हुए कहा कि हमें नियमित रूप से प्रतिदिन गायत्री मन्त्र का पाठ अवसर पर स्वागत किया गया।

समारोह में मुख्य अतिथि आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के संचालक श्री

"वैदिक प्रकाशन" की प्रस्तुति

आर्यजनता की भारी मांग पर पुनः निर्मित

ओ३म् स्टिकर

केवल मात्र 150/- सैंकड़ा

विक्रेताओं के लिए विशेष छूट

आज ही सभा कार्यालय को अपने आर्डर भेजें। डाक-व्यय अलग से देय होगा। सम्पर्क करें - २३३६०१५०, २३३६५९५९

Email : aryasabha@yahoo.com

दिल्ली सभा के "वैदिक प्रकाशन" की शानदार प्रस्तुति

दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह

(स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती द्वारा सम्पादित)

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित

गौकरुणानिधि, पंच महायज्ञविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्यरत्नमाला एवं आर्याभिविनय का अद्भुत संग्रह

केवल मात्र २५/- रुपये

डाक से मंगाने पर डाक व्यय अतिरिक्ति देय होगा।

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

।। ओ३म् ।।

वैदिक प्रकाशन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

☎ : 23360150, 23343737; टैलिफैक्स : 23365959

उपलब्ध साहित्य/ प्रचार सामग्री

क्र.	पुस्तक का नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य (रु. में)
1	**दयानन्द लघु ग्रन्थ संग्रह**	**स्वामी जगदीश्वरानन्द**	**25-**
2	**दैनिक सत्संग गुटका**	**स्वामी जगदीश्वरानन्द**	**400/-सैंकड़ा**
3	ट्रैक्ट : आर्योद्देश्यरत्नमाला	डॉ० रघुवीर वेदालंकार	250/-सैंकड़ा
4	ट्रैक्ट : वेद ईश्वरीय ज्ञान	डॉ० कृष्णवल्लभ पालीवाल	250/-सैंकड़ा
5	ट्रैक्ट : मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम	डॉ० महेश विद्यालंकार	350/-सैंकड़ा
6	ट्रैक्ट : महर्षि दयानन्द की विशेषताएं	डॉ० महेश विद्यालंकार	250/-सैंकड़ा
7	नैतिक शिक्षा की पुस्तकें (कक्षा 1-4)	श्री सुरेन्द्र रैली	प्रति कक्षा 15/-
8	नैतिक शिक्षा की पुस्तकें (कक्षा 5-8)	श्री सुरेन्द्र रैली	प्रति कक्षा 20/-
9	नैतिक शिक्षा की पुस्तकें (कक्षा 9-12)	श्री सुरेन्द्र रैली	प्रति कक्षा 25/-
10	सीडी : महामृत्युंजय मन्त्र, गायत्री मन्त्र, ऋषि गाथा, वैदिक संध्या-यज्ञ		प्रत्येक 40/-
11	वीसीडी : वैदिक संध्या-यज्ञ, ऋषि गाथा		प्रत्येक 50/-
12	कैसेटें - भजन, यज्ञ, ऋषि गाथा आदि		प्रत्येक 25/-
13	ओ३म् ध्वज (छोटे)		10/-
14	ओ३म् ध्वज (बड़े)		20/-
15	वीसीडी : अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-06 (दो सीडी)		100/-
16	**वीसीडी : सत्य की राह**		**50/-**
17	**वैदिक ओ३म् स्टिकर**		**150/- सैंकड़ा**

वैदिक प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की जानकारी अथवा आर्डर देने के लिए उपरोक्त पते अथवा E-mail : aryasabha@yahoo.com पर सम्पर्क करें। साहित्य/प्रचार सामग्री डाक द्वारा मंगाने पर डाकव्यय पथक् से देय होगा।

— महामन्त्री

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली– २ से छपवाकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; फैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com** से प्रकाशित किया।

सम्पादक : **ब्र० राजसिंह आर्य** सह सम्पादक : **विनय आर्य** व्यवस्थापक : **सुशील महाजन** सह व्यवस्थापक : **डॉ० ओमप्रकाश भटनागर**